|| एहसास ||

अंतर्मन को चंद शब्दों की बंदिशों ने प्रेरित किया ।
कुछ ही पल पहले एक कविता ने जन्म लिया ॥

नाज़ुक लफ़्ज़ों की शैतानी से नावाकिफ़ था समीरा ।
छोटी-छोटी छुरियों ने मिलकर काम तमाम किया ॥

आ गयी न जानें कहाँ से ये लयकारी ज़हन में ।
नाचीज़ को पल में इसने शायर यूं बना दिया ॥

ज़िल्द भारी-भरकम इस जहाँ में फलसफों के ।
तीरे-निगाहों ने तेरे उनका मर्म समझा दिया ॥

लम्बी बातों के सिलसिले बेमतलब हैं समीरा ।
बस ढाई अक्षर के जादू नें तेरा गुलाम बना दिया ॥

समीर खांडेकर
०६.०२.२०१४